RE: C.B.S.E. QUESTION PAPERS DISTORTING IMAGE OF RURAL AREAS

श्री नरेश यादव (बिहार): उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान इस देश के गांवों में रहने वाले गरीब और उनके बच्चों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। महोदय, 3 मार्च को जो केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड है उसने अपने अंग्रेजी के प्रश्न पत्र के माध्यम से गांवों के संस्कारों पर हमला करने का प्रयास किया है। महोदय, उस प्रश्न-पत्र में यह पूछा गया है कि गांव की बच्चियाँ स्कूल क्यों नहीं जाते हैं तो अंग्रेजी में, विदेशी भाषा में देश की अस्मिता पर हमला करने की साजिश के तहत यह बताया गया कि—गांव की बच्चियाँ, लड़कियां इसलिए स्कूल नहीं जाती हैं क्योंकि उनके कपड़े फटे रहते हैं और इसलिए उन पर रेप और बलात्कार की संभावना रहती है। इसलिए हमारी बच्चियां गांवों में स्कूल नहीं जाती है। इस तरह के प्रश्न-पत्रों के माध्यम से आखिर क्या बताना चाह रहे है? यह जो केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड है, यह क्या कहना चाह रहा है? महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि गांव की बच्चियों के कपड़े भले ही फटे हों लेकिन स्वाभिमान फटा हुआ नहीं है। आज भी गांव की बच्चियों का स्वाभिमान है। स्कूल में पढ़ने के लिए दस-दस किलोमीटर बच्चियां पैदल जाती है। अगर एक भी बच्ची पर कोई आंख उठा ले तो पूरा गांव उसके साथ हो जाता है। यह गांव की सभ्यता और संस्कृति है। इसलिए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यम से आज जो साक्षरता का अभियान हम पूरे देश में चला रहे हैं उससे हम क्या मैसेज दे रहे हैं कि बच्चियां गांव में नहीं पढ़ें? इसलिए मैं आपके माध्यम से चाहता हूं कि माननीय प्रधान मंत्री जी हाउस में आकर इस पर बयान दें कि ऐसे गलत प्रश्न-पत्र के जरिए हमारी सभ्यता पर आक्रमण क्यों किया गया? बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): वीणा वर्मा जी, आप एक वाक्य में कह लीजिए।

श्रीमती वीणा वर्मा (मध्य प्रदेश): माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं इससे अपने आपको सम्बद्ध करते हुए यही कहना चाहूंगी कि चाहे वह मीडिया हो या शिक्षा का क्षेत्र, आजादी के 50 वर्ष अभी बीतने जा रहे हैं, अब तक हम उस तरह की मानसिकता नहीं बना पाए हैं कि महिलाओं की छवि सुधरे। महिलाओं की छवि सुधारने के लिए मैं पहले भी संसद् के इस सदन में प्रश्न पूछ चुकी हूं। मेरा यह कहना है कि सी०बी०एस०सी० व एन०सी०ई०आर०टी० की किताबों का सिलेबस रेव्यू होना चाहिए और खास तौर से उसमें महिलाओं की छवि विशेष करके उभरे और एक अच्छा मैसेज जाए। इसके लिए पहले भी प्रश्न पूछा जा चुका है। इसलिए क्या कोई ऐसी कमेटी बनायेंगे जो सिलेबस को रेव्यू करे और इस तरह की छवि सुधारने का काम करे? ... **(व्यवधान)**...और जिन्होंने ऐसे प्रश्न-पत्र बनाए हैं उनके खिलाफ किस तरह से एक्शन लेंगे, यह बतायें?

श्रीमती चन्द्रकला पांडेय (पश्चिमी बंगाल): माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं अपने को इससे सम्बद्ध करते हुए केवल यह कहना चाहूंगी कि गांव, गरीबी और लड़कियों का मखौल उड़ाते हुए इस तरह के जो सवाल पूछे जा रहे है उनका मकसद क्या है और शिक्षकों के बारे में जो यह विद्यार्थियों के मन में गलत धारणा घर कर जाएगी, इसका क्या मकसद है? यह मैं माननीय शिक्षा मंत्री जी से चाहूंगी कि वह आकर इसका जवाब दें।

श्रीमती मालती शर्मा (उत्तर प्रदेश): मान्यवर, मैं भी अपने को इस विषय से सम्बद्ध करती हूं।

RE: MURDER OF DELHI POLICE OFFICER IN KALKA MAIL

श्री विष्णु कान्त शास्त्री (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभाध्यक्ष जी, पिछले कई सप्ताहों से उत्तर प्रदेश और बिहार की कानून और व्यवस्था की स्थिति निरन्तर बिगड़ती चली जा रही है और उसका एक घिनौना रूप ट्रेनों में डकैतियों के रूप में उभर रहा है। यह बहुत ही चिंताजनक स्थिति है कि आज कोई भी सुरक्षा का अनुभव नहीं करता जब गाड़ियां बिहार में प्रवेश करती हैं।

श्री नरेश यादव (बिहार): ट्रेनों में डकैती सिर्फ बिहार में ही नहीं पूरे देश में हो रही है। यह सिर्फ बिहार का ही सवाल नहीं है। आप सिर्फ बिहार का ही क्यों कह रहे हैं? ...**(व्यवधान)**...

श्री विष्णु कान्त शास्त्री: दूसरे क्षेत्रों में भी जिन प्रदेशों में डकैतियां होती हैं मैं सब की भर्त्सना करता हूं, लेकिन जिस घटना का वर्णन मैं कर रहा हूं वह मुगल सराय में उत्तर प्रदेश में और बिहार के बहुत निकट हुई और बिहार के ही लोग उसमें सम्बद्ध हैं ऐसा लोगों को लगता है, इसलिए मैंने इसका उल्लेख किया। मैं यह कहना चाहता हूं कि भारत सरकार आखिर ट्रेनों की डकैतियों को रोकने का काम किस तरह हाथ में लेगी

और उसके क्या परिणाम हो रहे हैं? पिछले बृहस्पतिवार को मुगल सराय स्टेशन पर 12 व्यक्तियों ने चढ़ कर जैसे ही ट्रेन छूटी बिहार की ओर तो डकैती शुरु कर दी। दिल्ली के एक पुलिस इंसपैक्टर अभय कुमार ने अपनी सर्विस रिवाल्वर से उनका बहादुरी से मुकाबला किया। दो डकैत मारे गए। लेकिन उन डकैतो की गोली से अभय कुमार शहीद हो गए। मैं चाहता था कि पिछले ही शुक्रवार को मैं उनका अभिनंदन करता, लेकिन देर से ही सही हमारा पूरा सदन अभय कुमार को अभिनंदित करे और उस शहीद ने जिस प्रकार हिम्मत के साथ इन डकैतों का मुकाबला किया उसको उसकी सही दिशा तक ले जाने के लिए सरकार और सख्ती से कदम उठाए जिससे ऐसी डकैतियां रुक जाएं। साथ ही उनके परिवार के प्रति पूरे राष्ट्र को कृतज्ञता ज्ञापित करनी चाहिए। उनकी पत्नी को कोई उचित सेवा का कार्य दिया जाना चाहिए। वह सुशिक्षिता हैं। उनकी तीन कन्यायें हैं। उन तीनों की शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। उनके परिवार का भरण-पोषण होना चाहिए और कम से कम पांच लाख रुपये सम्मान के रूप में उनको अर्पित किए जाने चाहिएं। मैं यह समझता हूं कि आज जिस तरह का एक अत्यन्त क्षोभजनक वातावरण सारे देश में फैला है...। मान्यवर, एक बहादुर ऑफीसर ने हिम्मत के साथ उन रेल डकैतों का सामना किया है। अगर हम उन की बहादुरी को सम्मानित करते हैं, उन का अभिनंदन करते हैं तो ऐसे बहादुरों की संख्या बढ़ेगी और मैं समझता हूं कि इस बारे में सारा सदन मेरा समर्थन करेगा। साथ ही मैं माननीय गृह मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि पुलिस के उस बहादुर अधिकारी के लिए सरकार क्या करने जा रही है? इस विषय में माननीय गृह मंत्री जी से जानकारी चाहूंगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): श्री राघवजी अनुपस्थित।

श्री गोविन्दराम मिरी (मध्य प्रदेश): महोदय, शास्त्री जी ने जो विषय उठाया है, मैं स्वयं को उसके साथ सम्बद्ध करता हूं।

श्री जलालुदीन अंसारी (बिहार): उपसभाध्यक्ष जी, अभी हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में हर रोज ट्रेन डकैतियां हो रही हैं जिस में रेलयात्री लूटे जा रहे हैं और घायल हो रहे हैं। उन की हत्या तक हो रही है। इसी सिलसिले में 3 मार्च को ही एक घटना हुई जिस में कालका मेल में डकैतों ने डकैती की और डकैतों का मुकाबला करते हुए एक बहादुर पुलिस अफसर ने उन डकैतों को मारा और डकैतों ने उन्हें मार दिया।
*

†[شری جلال الدین انصاری (بہار): اپ سبھا ادھیکش جی - ابھی ہمارے دیش کے وبھن حصوں میں ہر روز ٹرین ڈکیتیاں ہو رہی ہیں - جس میں ریل یاتری لوٹے جا رہے ہیں اور گھایل ہو رہے ہیں - ان کی ہتیا تک ہو رہی ہے - اس سلسلے میں تین مارچ کو ہی ایک گھٹنا ہوئی جس میں کالکا میل میں ڈکیتوں نے ڈکیتی کی اور ڈکیتوں کا مقابلہ کرتے ہوئے ایک بہادر پولیس افسر نے ان ڈکیتوں کو مارا اور ڈکیتوں نے انہیں مار دیا -]

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): अंसारी साहब, आप अपने को सम्बद्ध करिए।

श्री जलालुदीन अंसारी: महोदय, मैं कुछ घटनाओं का जिक्र करना चाहता हूं क्योंकि यह एक बहुत गंभीर समस्या बन गयी है। महोदय, उसी दिन नॉर्थ ईस्ट एक्सप्रेस में बरौनी और मोकामा स्टेशनों के बीच में डकैती हुई जिस में दो यात्री घायल हुए और लूटे गए। उस के बाद फिर बिहार में 6 मार्च को चार ट्रेनों में डकैती हुई। पटना जिले के नेऊश में डकैती हुई। उस के बाद उपसभाध्यक्ष महोदय, दिल्ली हावड़ा जनता एक्सप्रेस...

*[] Transliteration in Arabic script.

†شری جلال الدین انصاری: مہودے۔
میں کچھ گھٹناؤں کا ذکر کرنا چاہتا ہوں۔
کیونکہ یہ ایک بہت گمبھیر سمسیا بن گئی ہے۔
مہودے۔ اسی دن نارتھ ایسٹ ایکسپریس
میں بروٹی اور مکانا اسٹیشنوں کے بیچ میں
ڈکیتی ہوئی جس میں دو یاتری گھائل ہوئے
اور لوٹے گئے۔ اس کے بعد پھر بہار میں چھ
مارچ کو چار ٹرینوں میں پٹنہ ضلع کی بروانی
میں ڈکیتی ہوئی۔ اس کے بعد اب سمسیا مہودے۔
دہلی ہاوڑہ جنتا ایکسپریس ۔۔۔۔]

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): आप को पूरे देश की रेल डकैती पर नहीं बोलना है। आप सारांश में बोलिए, गृह मंत्री जी कुछ बोलना चाहते हैं।

श्री नरेश यादव: आप पूरे देश के बारे में बोलिए न।

श्री जलालुदीन अंसारी: बिहार के नाम से आप को चिढ़ क्यों होती है? बिहार में अगर डकैती होती है तो क्या हम कहेंगे कि मद्रास में हो रही है...(व्यवधान)...

†شری جلال الدین انصاری: بہار کے
نام سے آپ کو چڑ کیوں ہوتی ہے۔ بہار میں اگر
ڈکیتی ہوتی ہے تو کیا ہم کہیں گے کہ مدراس
میں ہو رہی ہے ۔۔۔ "مداخلت" ۔۔۔]

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): आप चैयर को एड्रेस कीजिए।

†[] Transliteration in Arabic script.

श्री जलालुदीन अनसारी: बिहार देश से अलग नहीं है। मैं कहना चाहता हूं कि 9 मार्च को ही दिल्ली हावड़ा एक्सप्रेस ट्रेन में डकैती हुई और सूचना यह है कि उस ट्रेन में एस्कॉर्ट पार्टी भी नहीं थी।

महोदय, रेल मंत्री जी कहते है कि सुरक्षा की जवाबदेही राज्य सरकारों की है। यह माना, लेकिन रेल प्रशासन और राज्य प्रशासन की दोहरी जवाबदेही है।

†شری جلال الدین انصاری: بہار دیش
سے الگ نہیں ہے۔ میں کہنا چاہتا ہوں کہ نو
مارچ کو ہی دہلی ہاوڑہ ایکسپریس ٹرین
میں ڈکیتی ہوئی اور سوچنا یہ ہے کہ اس
ٹرین ایسکارٹ پارٹی بھی نہیں تھی۔
مہودے۔ ریل منتری جی کہتے ہیں
کہ سرکشا کی جوابدہی راجیہ سرکاروں
کی ہے۔ وہ مانا لیکن ریل پرشاسن اور
راجیہ پرشاسن کی دوہری جوابدہی ہے۔]

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): कृपया समाप्त कीजिए।

श्री जलालुदीन अंसारी: महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि दोनों प्रशासन मिलकर यह जो यात्रियों की लूट हो रही है, डकैती हो रही है, हत्या हो रही है जिस में पुलिस ऑफीसर भी मारे जा रहे है, उसे रोकने की व्यवस्था करें। इस संबंध में सरकार कदम उठाए। ऐसी घटनाएं देश के किसी भी हिस्से में न हों, इस के लिए उपाय किए जाएं। यही मेरा निवेदन है।

†شری جلال الدین انصاری: مہودے۔
میں نویدن کرنا چاہتا ہوں۔ کہ دونوں پرشاسن

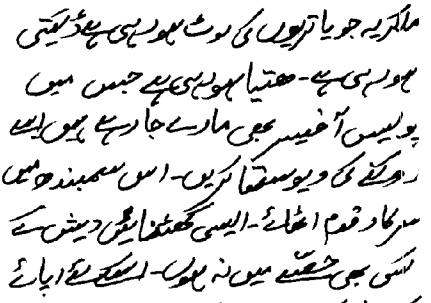

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी (उत्तर प्रदेश): महोदय, आप ने कहा था कि आप मुझे भी दो शब्द कहने का अवसर देंगे।

उपसभाध्यक्ष (श्री अजीत जोगी): ठीक है, बोल लीजिए।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: उपसभाध्यक्ष महोदय, बहादुर पुलिस अधिकार अभय कुमार की जिन परिस्थितियों में हत्या हुई या जिस प्रकार से वह शहीद हुए, यह इस बात का द्योतक है कि ट्रेनों में किस प्रकार से एक असुरक्षा का वातावरण व्याप्त है। लेकिन मुझे यह देखकर थोड़ा संतोष हुआ कि गृह मंत्री महोदय उस परिवार को सांत्वना देने गए। इस के लिए मैं उन की सराहना करना चाहूंगा। पर मामला केवल इतना ही नहीं है। उस परिवार को आगे किस प्रकार से सुरक्षा दी जाए और उसके भरण-पोषण का काम किया जाए, इसकी पूरी व्यवस्था होनी चाहिए और जितना जिस पद पर वह आगे बढ़ते रहते में समझता हूं कि उतनी तनख्वाह और पदोन्नति इत्यादि की जो व्यवस्था होती है, वह भी उस परिवार को मिलनी चाहिए। साथ में इस समय उस शहीद की जो लड़कियां पढ़ रही हैं, उन के भविष्य के लिए भी गृह मंत्री जी पूरा प्रयास करेंगे। मैं आशा करता हूं कि माननीय गृह मंत्री जी इन बातों पर सहानुभूतिपूर्वक ध्यान देंगे।

1.00 P.M.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI INDRAJIT GUPTA): Mr. Vice-Chairman, Sir, I can assure the hon. Members as well as the House that all these matters which he has referred to as to the welfare of this family are being looked into. They have been discussed in detail. As far as the financial questions or the questions of accommodation and education of the three daughters she has got are concerned, none of these things is going to be neglected. They are all being provided for.

I am very glad that he has raised this matter and paid tributes to this brave police officer who need not have risked his life at all. If he had sat their quietly, nobody would have known that he was a police officer and he need not have risked his life. But he had a conscience. As a police officer, he could not sit quietly. He came forward to do his duty and lost his life. I think we should all pay tributes to him.

About the other question, Sir, I propose, in my Ministry, to convene, shortly, a meeting of the authorities of the Railway Protection Force and the Government Railway Police because the Government Railway Police comes under the different State Governments and the other security agencies and law-enforcing agencies also. I am trying to plan out a meeting where all of them can be brought together. And we must discuss it because dacoity in running trains has become a menace now. We hope that we will be able to come up with some specific proposals which will bring some relief to the public. Thank you.